शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'शिवराजविजय' में राष्ट्रभक्तिपरक चिन्तन

परमानन्द कुमार (शोधार्थी)
संस्कृत विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

शोध संक्षेप

संस्कृत गद्य काव्य में श्री अम्बिकादत्त व्यास का अन्यतम स्थान है। उन्होंने अपनी कालजयी कृति 'शिवराजविजय' के माध्यम से शिवाजी महाराज की वीरता और राष्ट्रभक्ति का अद्भुत परिचय दिया है। इस आधुनिक गद्य काव्य के द्वारा पण्डित व्यास जी ने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का सफल चित्रण किया है। हिन्दू जाति की दयनीय स्थिति, मुसलमानों के अत्याचारों, दमनकारी प्रवृत्तियों आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है। इन यथार्थों के बीच इस उपन्यास के पात्रों में अदम्य शक्ति से परिपूर्ण राष्ट्रभक्ति के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। औरंगजेब की क्रूर नीतियों से विह्वल भारत को स्वतंत्रता दिलाने में शिवाजी का महत्त्वपूर्ण स्थान था। इसी संदर्भ में 'शिवराज विजय' के सामाजिक जीवन में राष्ट्रभक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

भूमिका

'शिवराजविजय' संस्कृत साहित्य की आधुनिक गद्य विधा है, जिसके रचयिता पण्डित अम्बिकादत्त व्यास हैं। यह एक ऐतिहासिक गद्य काव्य है। तीन विरामों में उपनिबद्ध इस उपन्यास के प्रत्येक विराम में चार-चार निःश्वास हैं, जो कुल 12 हैं। पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जी ने अपने 'शिवराजविजय' में तत्कालीन समाज में राष्ट्रभक्ति का संचार किया है। हिन्दू राजा अकर्मण्य और विलासी थे। हिन्दू समाज यवनों के अत्याचार से पीड़ित था। यवन शासक का साम्राज्य बढ़ने के साथ मन्दिर विध्वंस, हिन्दू कन्याओं का अपहरण, सर्वत्र मांस-मदिरा का प्रचलन इत्यादि घृणित कार्य चरम पर था। हिन्दू राजा यवन शासकों की दासता स्वीकार कर उनकी प्रशंसा में रत थे। इस स्थिति के विपरीत शिवाजी महाराज भारत के उत्थान के लिए प्रयत्नशील थे।

शिवराजविजय में राष्ट्रभक्तिपरक चिंतन

इन विषम परिस्थितियों में महाराष्ट्राधीश्वर वीर शिवाजी ने अपने शौर्य पराक्रम और सदाचरण द्वारा हिन्दू जनता और भारत की रक्षा का संकल्प लिया। उन्होंने देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति, आत्मविश्वास, स्वधर्मानुराग एवं मातृभूमि की सेवा भावना का हिन्दू जनता में संचार किया। अनीति की पराजय सर्वदा होती है। जिस विलासिता और व्यसन के कारण हिन्दू राजा का पतन हुआ उसी विलास और भोगप्राचुर्य के कारण मुस्लिम शासकों का भी पराभव हुआ। हिन्दुओं पर उनका अत्याचार अपनी चरमसीमा पर पहुँच चुका था। उनके अत्याचारों का वर्णन करते हुए व्यास जी कहते हैं -

".....क्वचिद्दारा अपह्रियन्ते, क्वचिद्धनानि लुण्ठ्यन्ते, क्वचिदार्तनादाः, क्वचिद्रुधिरधाराः, क्वचिदग्निदाहः, क्वचिद्गृहनिपातः, श्रूयते अवलोक्यते परितः।"[1]

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मुसलमान शासक इतने मदांध और विलासी प्रवृति के हो चुके थे कि अफजल खाँ भी वीर शिवाजी जैसे शक्तिशाली और सर्वसमर्थ राजा को पराजित करने की प्रतिज्ञा विजयपुर नरेश के सामने करके आया था, सदैव भोग-विलास और नशे में चूर रहता था। जिसका वर्णन करते हुए व्यास जी कहते हैं -

"स प्रौढ़ि विजयपुराधीश महासभायां प्रतिज्ञाय समायातोऽपि शिवप्रतापम च विदन्नपि अद्य नृत्यम् अद्य गानम्, अद्य लास्यम्, अद्य मद्यम्, अद्य वाराङ्गना अद्य भ्रुकुंसकः, अद्य वीणा वादनम् इति स्वच्छन्दैरुच्छृङ्खलाचरणैर्दिनानि गमयति।"[2]

इसी का परिणाम था कि गायक (गौर सिंह) के समक्ष अफजल खाँ सगर्व अपनी भावी गोप्य योजना (शिववीर की सन्धिब्याज से पकड़ने) की घोषणा स्पष्ट रूप से कर देता है। इस प्रकार तत्कालीन मुस्लिम राजाओं में उसी वृति का संचार हो रहा था, जिसके कारण हिन्दू राजाओं की पराजय हुई थी। उस समय हिन्दू राजाओं में आपसी वैरभाव बढ़ा हुआ था। वेश्याओं और मदिरा के चक्कर में अपनी सम्पति नष्ट कर चुके थे। मिथ्या प्रशंसा करने वाले चाटुकारों को ही सबसे निकट और हितैषी समझते थे और स्वार्थ की वृत्ति सर्वोपरि हो चुकी थी। इसी कारण तो भारत सैकड़ों वर्ष पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा रहा। इसका वर्णन करते हुए व्यास जी कहते हैं -

"शनैः शनैः पारस्परिक-विरोध-विशिथिलीकृत-स्नेहबन्धनेषु राजसु, भामिनी-भ्रूभङ्ग-भूरिभाव-प्रभाव-पराभूतवैभवेषु भटेषु स्वार्थ चिन्ता सन्तान वितानैकतानेषु अमात्यवर्गेषु प्रशंसामात्रप्रियेषु प्रभुषु। इन्द्रस्त्वं कुबेरस्त्वं वरुणस्त्वमिति वर्णनमात्रसक्तेषु बुधजनेषु।"[3]

किन्तु महाराष्ट्राधीश्वर वीर शिवाजी उन हिन्दू राजाओं में अपवाद रूप थे; न तो उनमें उक्त प्रकार की कमजोरी थी और न ही स्वार्थ लिप्सा। वे एक वीर, पराक्रमी, राजनीति पारंगत एवं कुशल प्रशासक थे। उनकी क्षमता व्यूहरचना, ओजस्विता एवं धीरता अपूर्व थी। इसी कारण विशाल सेना वाले मुस्लिम शासक के विरुद्ध उन्होंने विजय प्राप्त की। उनके गुप्तचर गौरसिंह आदि तथा द्वारपाल के चरित्र एवं कार्यों के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं। गौरसिंह अपनी गुप्तचरीय ब्यूहरचना का वर्णन करते हुए कहता है -

"भगवन्! सर्वं सुसिद्धम्, प्रतिगव्यूत्यन्तरालमङ्गीकृतसनातनधर्मरक्षामहाव्रतानां धारितमुनिवेषाणां वीरवराणामाश्रमाः सन्ति। प्रत्याश्रम च बलीकेषु गोपयित्वा स्थापिताः परश्शताः खड्गाः, पटलेषु तिरोभाविता शक्तयः कुशपु जान्तः स्थापिताः भुशुण्डयश्च समुल्लसन्ति। उच्छस्य शिलस्य, समिदाहरणस्य, इङ्गुदीपर्यन्वेषणस्य, भूर्जपत्र परिमार्गणस्य, कुसुमावाचयनस्यः तीर्थाटनस्य, सत्यङ्गस्य च व्याजेन केचन जटिलाः, परे मुण्डिनः इतरे काषयिणः, अन्ये मौनिनः अपरे ब्रह्मचारिणश्च बहवः पटवो बटवश्चराः, सरन्ति। विजयपुरादुड्डीयात्रागच्छत्या मक्षिकाया अप्यन्तःस्थितं। वयं विद्मः, किं नाम एषां यवनहतकानाम् ।"[4]

वीर शिवाजी सदैव योग्य और विश्वस्त व्यक्ति को ही गुप्तचर के रूप में नियुक्त करते थे। गुप्तचर की निपुणता, कार्यक्षमता, विश्वसनीयता और गम्भीरता आदि की परीक्षा लेने के बाद ही राजपक्ष के लोग गुप्तचरों को रहस्य की बातें बताते थे, केवल गुप्तचर होने मात्र से न तो उनकी सन्तुष्टि हो पाती थी और न ही वे उन्हें गुप्त सन्देशों के कहने योग्य समझते थे। तोरण

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दुर्ग का अध्यक्ष शिवाजी के गुप्तचर की परीक्षा लेकर ही उसे रहस्य की बात बताने के लिये तैयार होता है -

'नैतेषु विषयेषु कदापि सतन्द्रोऽवतिष्ठते महाराजः, स सदा योग्यमेव जनं पदेषु नियुनक्ति, नूनं बालोप्येषोऽबालहृदयोऽस्ति, तदस्मै कथयिष्याम्यखिलं वृत्तान्तम् पत्रं च केषुचिद् विषयेपु समर्पयिष्यामि।"[5]

गौरसिंह गुप्तचर का कार्य करते हुए कभी ब्रह्मचारी बनता है तो कभी संन्यासी; कभी गायक बनता है तो कभी उत्कट यौद्धा। और सर्वत्र अपना कार्य बड़ी कुशलता से करता है। दूसरी ओर शिवाजी के द्वारा नियुक्त सभी कर्मचारी अपना कार्य अत्यन्त निष्ठा विश्वास और स्वामिहित भावना से करते थे। वे किसी बहकावे या उत्कोच आदि के प्रलोभन में नहीं आते थे। स्वामी की आज्ञा के सामने ब्रह्मा तक के आदेश मानने को तैयार नहीं होते थे। स्वामी का आदेश ही उनके लिए ब्रह्मा का आदेश होता था। इसी प्रकार के आचरण की एक द्वारपाल की उक्ति द्रष्टव्य है -

"सन्यासिन्! सन्यासिन्!! बहूक्तम् विरम, न वयं दौवारिका ब्रह्मणोः प्याज्ञां प्रतीक्षामहे। किन्तु यो वैदिक धर्म रक्षाव्रती, यश्च सन्यासिनां ब्रह्मचारिणां तपस्विनानां च, संन्यासस्य ब्रह्मचर्यस्य तपसश्चाप्तरायाणां हन्ता, येन च वीरप्रसविनीयमुच्यते कोङ्कणदेशभूमिः तस्यैव महाराजशिववीरस्याऽऽज्ञां वयं शिरशा वहामः।"[6]

महाराज शिवाजी एक स्वाभिमानी शासक थे। अपने शत्रु मुगल शासकों से सन्धि करना या उनकी अधीनता स्वीकार करना उन्हें स्वीकार न था। इस स्थिति में शत्रुओं से रक्षा का एकमात्र उपाय युद्ध ही था। शत्रु से सन्धि करने की अपेक्षा अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देना वे कहीं अधिक श्रेयष्कर समझते थे। अपने इन विचारों पर वे सदैव दृढ़ रहे। शिवाजी के हृदय में यवनों से प्रतिशोध लेने की भावना कितनी प्रबल थी इसका एक सुन्दर उदाहरण देखिये-

"ये अस्मादिष्टदेव मूर्तीभङ्त्वा मन्दिराणि समुन्मूल्य तीर्थस्थानानि पक्वणी कृत्य, पुराणानि पिष्ट्वा, वेद पुस्तकानि विदीर्य च आर्यवंशीयान् बलाद्यवनीकुर्वन्ति; तेषामेव चरणयोर ्जलिं बद्धवा लालाटिकतामङ्गी कुर्याम् ? एवं चेद धिक् मां कुलकलङ्ककलीवम्। या प्राणभयेन सनातनधर्मद्वेषिणां दासे तां वहेत्। यदि चाहमाहवे म्रियेय, बध्येय, ताडयेय वा तदैव धन्योऽहम् धन्यो च मम पितरौ। कथ्यतां भावदृशां विदुपामत्र कः सम्मतिः ?"[7]

निष्कर्ष

इस प्रकार व्यास जी ने तत्कालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का सम्यक् चित्रण करते हुए अपने राष्ट्र के प्रति उद्गार प्रकट किया है। यही कारण है कि पं॰ व्यास जी को आधुनिक संस्कृत मनीषियों ने 'राष्ट्रकवि' के अभिधान से अभिहित किया है।

संदर्भ संकेत

1 (डॉ.) मिश्र रमाशङ्कर, 'शिवराविजयः', चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण-2018, संस्करण-2018, पृष्ठ 36 (प्रथम निःश्वास)

2 (डॉ.) मिश्र रमाशङ्कर, 'शिवराविजयः', पृष्ठ 164 (द्वितीय निःश्वास)

3 (डॉ.) मिश्र रमाशङ्करः, 'शिवराविजयः', पृष्ठ 55 (प्रथम निःश्वास)

4. (डॉ.) मिश्र रमाशङ्करः, 'शिवराविजयः', पृष्ठ 137 (द्वितीय निःश्वास)

5 (डॉ.) मिश्र रमाशङ्करः, 'शिवराविजयः', पृष्ठ 356 (चतुर्थ निःश्वास)

6 (डॉ.) मिश्र रमाशङ्करः, 'शिवराविजयः', पृष्ठ 114
(द्वितीय निःश्वास)
7 (डॉ.) मिश्र रमाशङ्करः, 'शिवराविजयः', पृष्ठ 211
(द्वितीय निःश्वास)